दैनिक जागरण, भोपाल 14 JAN 2011

प्रदेश में बढ़ीं लाड़लियां

शशिकांत तिवारी, भोपाल

महिला अत्याचार के मामले में कलंक झेल रहे प्रदेश के लिए राहत भरी खबर है। प्रदेश में लक्ष्मी का दर्जा मिलने के बाद लाड़लियों का आंकड़ा भी उछाल मार गया है। लड़कों की तुलना में अब लड़कियों की संख्या ज्यादा पीछे नहीं है। बल्कि यह अनुपात राष्ट्रीय औसत को भी लांघ गया है। खास बात यह है कि प्रदेश के पिछड़े और आदिवासी बहुल जिले लाड़लियों के पालनहार साबित हुए हैं।

यह खुलासा हुआ है स्वास्थ्य विभाग के हेल्थ मैनेजमेंट इंफारमेशन सिस्टम (एचआईएमएस) द्वारा जारी हालिया रिपोर्ट में। रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2010 में अप्रैल से नवंबर तक एक हजार लड़कों के विरूद्ध 934 लड़कियों ने जन्म लिया है। अच्छी बात यह है कि प्रदेश के 50 में से 47 जिलों में लड़कों के विरूद्ध 900 से अधिक लड़कियों का जन्म हुआ है। महज तीन जिले ही ऐसे बचे हैं, जिसमें यह अनुपात 900 से कम है। वर्ष 2001 की जनगणना के मुताबिक प्रदेश का लिंगानुपात 919 था। जबकि 0-6 उम्र में एक हजार लड़कों पर लड़कियों की संख्या 920 थी। हाल की में यह अनुपात 934 दिखाया गया है। पिछले साल राष्ट्रीय अनुपात का औसत 933 था। अब प्रदेश के 29 जिले ऐसे हैं जो राष्ट्रीय स्तर से ऊपर पहुंच गए है। सबसे बेहतर स्थिति में मंडला व झाबुआ हैं, जहां लिंगानुपात 972 है, जबकि सबसे बुरे हाल ग्वालियर के हैं। यहां एक हजार लड़कों पर 885 लड़कियों ने जन्म लिया। प्रदेश के सबसे साक्षर जिले नरसिंहपुर में यह अनुपात 889 व नीमच 890 है। पिछली जनगणना के मुताबिक प्रदेश के 14 जिलों में लिंगानुपात 900 से भी कम था। 26 जिले राष्ट्रीय औसत से नीचे थे। अब मात्र 20 जिले ही इस औसत से कम हैं।

• लड़कियों की संख्या बढ़ाने में पिछड़े जिले आगे

इसलिए बिगड़ी थी हालत : अनुपात में बड़े अंतर की वजह थी प्रदेश के कई जिलों में हो रही कन्या भ्रूण हत्या। नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक लिंग चयन के बाद गर्भपात प्रदेश में 4.8 रहा है। इसके कई सबूत मिले हैं प्रदेश के उत्तरी जिलों में कन्या भ्रूण हत्या के मामले ज्यादा हैं। यही नहीं प्रदेश में महिलाओं और पुरुषों की संख्या के बीच अंतर लगातार घटता रहा है और 1991 की जनगणना में तो लिंगानुपात घटकर 912 तक पहुंच गया।

योजनाओं का योगदान : निश्चित तौर पर पहली नजर में इसे सरकार की योजनाओं का परिणाम माना जा रहा है। खासकर लाड़ली लक्ष्मी, जननी सुरक्षा, गोद भराई, अन्न प्रासन्न जैसी योजनाओं ने मानस पर असर डाला है। जन्म से पढ़ाई और शादी तक के लिए सहायता राशि की व्यवस्था होने से लड़कियों के प्रति समाज में सोच बदली है। इस रिपोर्ट में पिछड़े जिलों के आंकड़े इस बात को साबित करते नजर आ रहे हैं। वहीं जन्म पूर्व लिंग परीक्षण पर रोक के लिए लागू पीएनडीटी एक्ट का सख्ती से पालन भी इसकी खास वजह में शामिल है।

भोपाल में भी सुधार : पिछली जनगणना में भोपाल जिले का लिंगानुपात 889 था। ताजा आंकड़ों में यह संख्या 945 दर्शायी गई है। इसके तहत भोपाल राष्ट्रीय औसत से काफी अच्छी स्थिति में है।

पिछड़े ज़िलों की स्थिति

मंडला	972
झाबुआ	972
शिवनी	969
अलिराजपुर	947
बैतूल	945
छिंदवाड़ा	944
उमरिया	942
डिंडोरी	939
सीधी	938
बड़वानी	936

प्रदेश में लिंगानुपात बढ़ना बहुत अच्छा है। लोगों में जागरूकता आई है और लिंग चयन को तवज्जो नहीं मिली है। हमारा प्रयास इस अंतर को और कम करना है।

डा. एएन मित्तल
संचालक, स्वास्थ्य सेवाएं